Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani (LNMU)

Class - B.A - III (Honours)
Paper - VI

Topic - अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति (अर्थ)

प्रथम विश्वयुद्ध से पहले अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से अभिप्राय यूरोपीय देशों की पारस्परिक राजनीति से लगाया जाता था। लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विश्व के राजनीतिक वातावरण में आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और तकनीकी परिवर्तन होने शुरू हुए। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद समाप्त होने लगे और फलस्वरूप एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका महाद्वीपों के अनेक राष्ट्र स्वतंत्र हो गये। संयुक्त राष्ट्रसंघ के उदय से यूरोपीय देशों की राजनीति को ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मानने की परम्परा समाप्त हो गई तथा अब उसमें एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमरीकी देशों का अध्ययन शामिल हो गया। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में संचार के क्षेत्र में महान् क्रांति हुई, जिसके कारण देशों के बीच भौगोलिक दूरियां कम हो गयी और विश्व के राष्ट्र अधिक निकट आ गये। इसका परिणाम यह हुआ कि विश्व के किसी भी भाग में घटने वाली घटना का प्रभाव विश्व के अन्य भाग पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ने लगा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यही अध्ययन किया जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से किस प्रकार का सम्बन्ध रखेगा, वह अपनी विदेश नीति को क्या रूप प्रदान करेगा तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अन्य राष्ट्रों के साथ किस प्रकार की नीति का निर्धारण करेगा।

Scanned with CamScanner

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अर्थ

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रत्येक राष्ट्र शक्ति के माध्यम से अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि इससे इसे अधिक से अधिक लाभ हो और उसके राष्ट्रीय हितों की वृद्धि हो। दूसरे शब्दों में, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्र अपने हित साधन के लिए आपसी सम्बन्धों में संघर्ष की जिस स्थिति में रहते हैं उसी का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विषय-वस्तु है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं — राष्ट्रीय हित, संघर्ष एवं शक्ति। राष्ट्रीय हित अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का लक्ष्य है, संघर्ष उसकी प्रकृति है तथा शक्ति उसका साधन है, परन्तु इन तीन तत्वों में संघर्ष ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। संघर्ष के बिना राष्ट्रीय हित और शक्ति जैसे तत्व महत्वहीन हो जाएंगे, किन्तु इससे यह आशय नहीं है कि शक्ति संघर्ष ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का मुख्य तत्व है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में संघर्ष के साथ-साथ सहयोग भी देखने को मिलता है।

वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन वास्तव में विवाद के नियन्त्रण और सहयोग की स्थापना का अध्ययन है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से इस बात का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है कि दो राष्ट्रों में संघर्ष क्यों पैदा होता है और

Scanned with CamScanner

इसका समाधान किस प्रकार हो सकता है। वस्तुतः अपनी शक्ति बढ़ाने तथा किसी भी विवाद या संघर्ष में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए राज्यों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे अपने अनुकूल राज्यों से मित्रता बनाएं, विभिन्न प्रकार की सन्धियां एवं समझौते करें। विवाद और युद्ध की स्थिति उत्पन्न होने पर दूसरे देश से सन्धियां समझौते करके अपनी शक्ति बढ़ाना और भी अधिक जरूरी हो जाता है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक ओर राज्यों में विवाद उत्पन्न होते हैं, दूसरी ओर शक्ति द्वारा इनको सुलझाने का प्रयास होता है। यह दोहरी प्रक्रिया अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को गतिशीलता प्रदान करती है।

Khushbu Kumari
17th July 2020

Scanned with CamScanner